International Journal of Home Science 2019; 5(2): 465-466

International Journal of Home Science

ISSN: 2395-7476
IJHS 2019; 5(2): 465-466
© 2019 IJHS
www.homesciencejournal.com
Received: 06-03-2019
Accepted: 10-04-2019

Mridula Gautam
Lecturer Senior Secondary, Department of Home Science, Banasthli Vidyapith University, Rajasthan, India

Indu Bansal
Dean, Department of Home Science, Banasthli Vidyapith University, Rajasthan, India

Correspondence
Mridula Gautam
Lecturer Senior Secondary, Department of Home Science, Banasthli Vidyapith University, Rajasthan, India

बच्चों के सर्वागीण विकास में घर में उपलब्ध वस्तुओं व होममेड़ खिलौनों की भूमिका

Mridula Gautam and Indu Bansal

सारंश
खेल बच्चों की जिन्दगी का महत्वपूर्ण हिस्सा है। यह बच्चों के सर्वागीण विकास के लिए आवश्यक है।खेल पढ़ाई के माध्यम की नींव है। ये बच्चे को अकेले रहना व समूह के साथ सामजंस्य करना सिखाते हैं।खेल बच्चों को स्वतंत्रता प्रदान करते हैं। शैक्षिक खिलौनों के माध्यम से बच्चे आकार, रंग पहचानना, गिनती सीखना, कहानी व कविता द्वारा ज्ञान प्राप्त करते हैं।महंगे व बाजार से खरीदे गये खिलौने ही बच्चे के विकास के लिये आवश्यक हैं। ऐसा नहीं है घर में उपलब्ध वस्तुओं से एवं अनुपयोगी वस्तुओं से भी खिलौने बनाए जा सकते हैं वे भी बच्चों को उतनी ही प्रसन्नता व ज्ञान प्रदान करते हैं जितने बाजार से लाए गए खिलौने।
उत्सुकता और खोज को बढ़ावा देने के लिए कास्ट फ्री खिलौने व्यर्थ माने जाने वाली वस्तुओं से बनाए जा सकते हैं और इनके माध्यम से भी बच्चों को बहुत सी चीज़ें सिखाई जा सकती है।

मूलशब्दः सर्वागीण', विकास, नींव, स्वतंत्रता, उत्सुकता, क्रियात्मक, प्रयास।

प्रस्तावना
खेल बच्चों की जिन्दगी का महत्वपूर्ण हिस्सा है। यह बच्चों के सर्वागीण विकास के लिए आवश्यक है। खेल व खिलौनों के माध्यम से बच्चे अपने रचनात्मकता, कल्पना शक्ति, भावनात्मक दृढ़ता को प्राप्त करते हैं।
खेल पढ़ाई के माध्यम की नींव है। ये बच्चे को अकेले रहना व समूह के साथ सामजंस्य करना सिखाते हैं। इसके माध्यम से बच्चे अपने भाई–बहनों, साथियों के साथ अच्छे संबंध बनाना सीखते हैं। खेल बच्चों को स्वतंत्रता प्रदान करते हैं और उनके शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, क्रियात्मक विकास में सहायक हैं। बच्चे अलग–अलग प्रकार के खेल व खिलौनों से खेलते हैं। उन सभी का उसके व्यक्तित्व पर अलग–अलग प्रभाव पड़ता है। जैसे – शैशवावस्था में बच्चे सामाजिक खेल खेलते हैं जिनसे वे अपने समाज से परिचित होते हैं। इस उम्र में बच्चे अपने माता–पिता एवं देखभाल करने वाले व्यक्ति से भावनात्मक लगाव व (Understanding) समझ विकसित करते हैं।खेल के माध्यम से स्थूल व सूक्ष्म मांसपेशियों का प्रयोग करना एवं क्रियात्मक विकास की ओर अग्रसर होते हैं।
शैक्षिक खिलौनों के माध्यम से बच्चे आकार, रंग पहचानना, गिनती सोखना, कहानी व कविता द्वारा ज्ञान प्राप्त करते हैं।
महंगे व बाजार से खरीदे गये खिलौने ही बच्चे के विकास के लिये आवश्यक हैं। ऐसा नहीं है घर में उपलब्ध वस्तुओं से एवं अनुपयोगी वस्तुओं से भी खिलौने बनाए जा सकते हैं वे भी बच्चों को उतनी ही प्रसन्नता व ज्ञान प्रदान करते हैं जितने बाजार से लाए गए खिलौने। इन खिलौनों को बनाने में ज्यादा कीमत भी नहीं लगती और ये जल्दी ही तैयार हो जाते है। इसके लिए हमें आंगनबाड़ी के बच्चों के लिये कुछ एक्टिविटि तैयार की इन एक्टिविटि में इन बच्चों ने बढ़ चढ़कर के हिस्सा लिया।

सामग्री
- विभिन्न रंगों की दालें–मूंग, मसूर, उडद
- आटा
- धागे की खाली रीलें
- विभिन्न रंगों के कागज

- सुतली
- वाटर का पोस्टर कलर, ब्रश
- बेलून
- न्यूज पेपर
- प्लास्टिक की खाली बोतल
- विभिन्न रंग के ऊन
- रंगीन बटने
- मोती
- वायर
- छोटे–बड़े साइज के पत्थर
- फेवीकोल

एक्टिविटी 1: एक प्लास्टिक की चौड़े मुंह की बॉटल लेकर बच्चों को ऊन से बने हुए अलग–अलग रंग के गोलों को उसमें डालने को कहा गया जो बच्चे रंग सही पहचानने थे उनने सही रंग के ऊन के गोले अन्दर डाले जिन्हें रंग की पहचान नही थी। उन्होंने गलत रंग के गोले अंदर डाले थोड़े प्रयास के बाद सभी बच्चों ने सही रंग के गोले बॉटल में डालने में सफलता हासिल की।

एक्टिविटी 2: रंगों की पहचान के लिये ही हमने चार–पाँच प्रकार की दालों को मिक्स कर दिया और बच्चों को उन्हें रंगों के हिसाब से अलग–अलग करने के लिये कहागया। कुछ बच्चों ने पहले प्रयास में ही अलग–अलग रंगों की दालें को अलग किया कुछ को अधिक समय लगा।

एक्टिविटी 3: 15–20 धागे की खाली रील ली उनमें विभिन्न रंगों के पेपर चिपका दिये फिर बच्चों को एक–एक सुतली का टुकड़ा दिया। जिसमें नीचे की तरफ गांठ लगी हुई थी जिससे रील बाहर ना निकल जाए अब बच्चों को यह रील सुतली में डालने को कहा गया कुछ बच्चों ने तो जल्दी–जल्दी रील सुतली में डाल दी। कुछ को बहुत देर लगी। इस एक्टिविटी से बच्चों को ध्यान केन्द्रित करना व दोनों हाथों का कोआर्डिनेशन करना आया।
चिकनी काली मिट्टी के द्वारा उन्हें छोटी व बड़ी गोलियां बनवाई गई फिर उन्हें सुखा लिया। सूखने पर इनमें अलग–अलग रंग कर दिये इन गोलियों से उन्हें गिनती गिनना सिखाया गया साथ ही छोटे व बडे आकार की पहचान करना सिखाया।

एक्टिविटी 4: पुराने प्लास्टिक या टिन के डिब्बों पर रंगीन पेपर चिपकाकर उन्हें बच्चें के सामान रखने के काम में लिया इसके अतिरिक्त इन डिब्बों को बच्चों ने रोलिंग टाय के रूप में भी इस्तेमाल किया और बहुत खुश हुए।

एक्टिविटी 5: इस एक्टिविटी के लिए बच्चो को रंगीन बटने दी गई और उन्हें उसके माध्यम से जोड़ना सिखाया गया जैसे .४ बटन लाल रंग की ३ बटन हरे रंग की दोनों को मिलाकर जोड़ने को कहा गया इस प्रकार अलग अलग अंक जोड़ने को दिए गए थोड़ी देर मैं बच्चो को इस प्रकार जोड़ना आ गया और इस एक्टिविटी मैं उन्हें मजा भी बहुत आया।

एक्टिविटी 6: चार रंग की शीट ली उनसे बराबर आकर के कार्ड काट लिए और उन पर १-१०० तक की गिनती लिख ली ६-७ बच्चो का ग्रुप बनाया और उन्हें बराबर मात्रा मैं कार्ड बाँट दिए अब बच्चो से १-१०० तक के कार्ड क्रम से निचे डालने के लिए कहा गया जिस बच्चे के पास १ नंबर का कार्ड था उसने सबसे पहले अपना कार्ड निचे डाला उसके बाद २, ३, ४, ५ इस तरह बच्चे कार्ड डालते चले गए और १०० होने पर गिनती ख़तम हुई बच्चो ने इस एक्टिविटी से अपनी बरी आने तक इंतज़ार करना भी सीखा ।

एक्टिविटी 7: सामग्री वायर, विभिन्न आकार के मोती-बच्चो को वायर दिया गया उसमे निचे की और एक गांठ लगाडी गई जिससे मोती निचे से बहार न निकले और बच्चो को वायर मैं पहले छोटे मोती उसके बाद उससे बड़ा मोती इस तरह क्रम से मोती डालने को कहा गया सबसे आखिर मैं सबसे बड़ा मोती आएगा इस प्रकार बच्चो को आकार का ज्ञान कराया जा सकता है।

निष्कर्ष

इन सभी गतिविधियों के द्वारा हमने यह देखा कि उत्सुकता और खोज को बढ़ावा देने के लिए कास्ट फ्री खिलौने व्यर्थ माने जाने वाली वस्तुओं से बनाए जा सकते हैं और इनके माध्यम से भी बच्चों को बहुत सी चीज़ें सिखाई जा सकती है। जैसे – रंगों का ज्ञान, आकार का ज्ञान गिनती आदि।
इन खिलौनों के द्वारा भी बच्चों का शारीरिक, मानसिक, सामाजिक क्रियात्मक व कल्पना शक्ति का विकास होता है।

संदर्भ

1. Anan, Aya. The process of sharing rule in children's play, Japanese Journal of educational psychology. 1989; 31:218-224.
2. Holmes, Robyn M. Categories of play: A kindergartner's view, Play and culture 1991; 4:43-50.
3. Lyytinen, Pawla. Development trends in children's Pretend Play Child care, Health and Development. 1991; 17:9-25.
4. Ucci Mar Mary. Play dough: 50 year, old. And Still Gooey, Fun, and Educational Child Health alert 24.
5. Benham-Deal, T. 2005, Preschool children's accumulated and sustained Physical activity, Perceptual and motor skills. 2006; 100:443-450.
6. Cullen Joy. Preschool Children's Use and Perceptions of outdoor play area's Early Child Development and Care. 1993; 89:45-56.
7. Frimie, Rosemary F. Increasing the learning experiences of Pre-School Student through the Development of a Physical play environment, Child Development, 2005.